



भारतीय रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण

यह एडिटरियल 23/07/2023 को 'हद्वि बज़िनेसलाइन' में प्रकाशित "Will rupee trade gain currency globally?" लेख पर आधारित है। इसमें डी-डॉलराइज़ेशन और भारतीय रुपए के अंतर्राष्ट्रीयकरण के बारे में चर्चा की गई है।

प्रलिमिस के लिये:

[डी-डॉलराइज़ेशन](#), [मुद्रा वनिमिय समझौते](#), [पूंजी खाता परविरतनीयता](#), [SWIFT](#), [अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र](#), [एकीकृत भुगतान इंटरफेस](#), [वशिष वोस्ट्रो रुपया खाते](#), [भारतीय रज़िर्व बैंक](#)

मेन्स के लिये:

डी-डॉलराइज़ेशन से संबंधित लाभ और चुनौतियाँ

वैश्विक व्यापार में अमेरिकी डॉलर ने लंबे समय से प्रभुत्व बना रखा है और वदेशी मुद्रा लेनदेन, व्यापार एवं आरक्षण होल्डिंग्स के लिये प्रमुख मुद्रा के रूप में कार्य करता रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में रुपए के उपयोग को बढ़ावा देने के भारत के जारी रहे प्रयास [डी-डॉलराइज़ेशन \(de-dollarisation\)](#) और मुद्रा विविधीकरण ([currency diversification](#)) की दशा में कदम का प्रतिनिधित्व करते हैं। हालाँकि इसमें चुनौतियाँ बनी हुई हैं लेकिन नरियात वृद्धि, [पूंजी खाता परविरतनीयता \(capital account convertibility\)](#) और [नरितर आर्थिक विकास](#) का संयोजन रुपए के लिये वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिति हासिल करने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

डॉलर के प्रभुत्व को कम करने की यात्रा में कुछ ठोस प्रयासों की आवश्यकता होगी और इसकी सफलता तेज़ी से उभरते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में भारत के लचीलेपन और अनुकूलन क्षमता पर निर्भर करेगी।

उन देशों की संख्या बढ़ती जा रही है जो डॉलर पर अत्यधिक निर्भरता से संबद्ध अंतरनहिति जोखिमों की पहचान कर रहे रहे हैं। [इनजोखिमों में अमेरिकी राजनीतिक प्रभाव में आना](#), [प्रतबंध और वनिमिय दर अस्थिरता जैसे जोखिम](#) शामिल हैं। इन चिंताओं पर एक प्रतिक्रिया के रूप में कई उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ सक्रिय रूप से अपने व्यापार के डी-डॉलराइज़ेशन और अपनी मुद्रा के उपयोग में विविधता लाने के प्रयास कर रही हैं।

मुद्रा के उपयोग के वर्तमान रुझान:

- अंतर्राष्ट्रीय भुगतान में स्थानीय मुद्राओं का उपयोग:
 - [SWIFT](#) डेटा संकेत देता है कि वर्ष 2013 से 2019 के बीच अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन में स्थानीय मुद्राओं के उपयोग में वृद्धि हुई।
- नॉन-डॉलर-डीनॉमिनेट व्यापार में वृद्धि:
 - वर्ष 2022 का त्रिवार्षिक बैंक सर्वेक्षण दैनिक कारोबार में डॉलर की हस्सेदारी में मामूली वृद्धि को दर्शाता है लेकिन उभरती अर्थव्यवस्थाएँ तेज़ी से डॉलर के अतिरिक्त किसी अन्य मुद्रा मूल्य में व्यापार या नॉन-डॉलर-डीनॉमिनेट व्यापार (Non-Dollar-Denominated Trade) में संलग्न हो रही हैं।
- चीन के रेंमिनिबी का उदय:
 - वर्ष 2022 में चीन की मुद्रा रेंमिनिबी (Renminbi) विश्व स्तर पर पाँचवीं सबसे अधिक कारोबार वाली मुद्रा बन गई, जहाँ 70% से अधिक चीन-रूस व्यापार युआन और रूबल में संपन्न हुआ।
- स्थानीय मुद्रा बाण्ड बाज़ारों का विकास:
 - उभरते स्थानीय मुद्रा बाण्ड बाज़ारों का वर्ष 2015 से 2021 के बीच व्यापक वसितार हुआ, जो डॉलर-मूल्य वाले परसिपत्तियों (dollar-denominated assets) के लिये एक विकल्प पेश करते हैं।

रुपए को मज़बूत करने के लिये भारत के प्रमुख प्रयास:

- **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (International Financial Services Centre- IFSC) की स्थापना:**
 - गफिट सिटी (GIFT City), गुजरात में भारत का पहला IFSC स्थापति किया गया है, जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय लेनदेन में रुपए के उपयोग को बढ़ावा देना है।
- **पूंजी बाजार का उदारीकरण:**
 - भारत ने रुपए की अपील को बढ़ाने के लिये रुपए-मूल्य वाले वित्तीय साधनों, जैसे बॉण्ड और डेरिवेटिव्स, की उपलब्धता में वृद्धि की है।
- **डिजिटल भुगतान प्रणाली को बढ़ावा:**
 - **यूनफाइंड पेमेंट इंटरफेस (UPI)** जैसी पहल ने रुपए में डिजिटल लेनदेन की सुविधा प्रदान की है।
 - हाल ही में फ्रांस और सगिपुर ने UPI का सीमिति उपयोग शुरू किया है।
- **स्पेशल वॉसट्रो रुपी अकाउंट (SVRAs) की शुरुआत:**
 - भारत ने 18 देशों के अधिकृत बैंकों को बाजार-नरिधारति वनिमिय दरों पर रुपए में भुगतान के नपिटान के लिये SVRAs खोलने की अनुमति दी है।
 - इस तंत्र का उद्देश्य कम लेन-देन लागत, अधिक मूल्य पारदर्शिता, तेज़ नपिटान समय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को समग्र रूप से बढ़ावा देना है।

रुपए के अंतर्राष्ट्रीयकरण हेतु उपलब्ध अवसर:

- **उत्प्रेरक के रूप में नरियात वृद्धि:**
 - वर्ष 2030 तक भारत का 2 ट्रिलियन डॉलर का महत्त्वाकांक्षी नरियात लक्ष्य रुपए की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार लाने में योगदान कर सकता है।
- **पूर्ण पूंजी खाता परविरतनीयता:**
 - रुपए की पूर्ण परविरतनीयता हासिल करने से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और नविश के लिये इसका आकर्षण बढ़ेगा।
- **सतत् आर्थिक विकास:**
 - उच्च और नरितर आर्थिक विकास से वैश्विक व्यापार बाजार में भारत की स्थिति मज़बूत होगी।
- **अमेरिकी मौद्रिक नीति प्रभाव को कम करना:**
 - अमेरिकी डॉलर के उपयोग को कम करके वशिव के वभिन्नि देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं पर अमेरिकी मौद्रिक नीति के प्रभाव को कम कर सकते हैं।
- **बेहतर मौद्रिक नीति प्रभावशीलता:**
 - रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण भारत की मौद्रिक नीति की प्रभावशीलता को बढ़ा सकता है।
 - रुपए की व्यापक अंतर्राष्ट्रीय पहुँच के साथ **भारतीय रज़िर्व बैंक (RBI)** मुद्रास्फीति को प्रबंधित करने और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिये वनिमिय दर को एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल कर सकता है।
 - यह मौद्रिक स्थितियों के प्रबंधन और आर्थिक चुनौतियों सामना करने में अधिक लचीलापन प्रदान करेगा।

रुपए में व्यापार से संबद्ध चुनौतियाँ और सीमाएँ:

- **डॉलर पर उच्च नरिभरता:**
 - वृहत परयासों के बावजूद भारतीय आयात का एक बड़ा हिस्सा (80%) अभी भी डॉलर में होता है, जिससे डी-डॉलराइज़ेशन का प्रभाव सीमिति हो जाता है।
- **गैर-परविरतनीय मुद्रा संबंधी चिंताएँ:**
 - रुपए की परविरतनीयता की कमी के कारण भागीदार देश स्थानीय मुद्रा व्यापार में संलग्न होने में संकोच कर सकते हैं, जिससे संभावित व्यापार चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- **बढ़ता रुपया भंडार:**
 - उपयोग के लिये पर्याप्त अवसर के बनि भागीदार देशों के भंडार में रुपए का संचय समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है।
- **वनिमिय दर अस्थिरता:**
 - रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण इसे वनिमिय दर में वृहत अस्थिरता के जोखिम में लाएगा।
 - रुपए के मूल्य में उतार-चढ़ाव व्यापार प्रतस्पर्द्धात्मकता, वदिशी नविश प्रवाह और वित्तीय बाजार स्थिरता को प्रभावित कर सकता है।
 - संभावित प्रतकूल प्रभावों को कम करने के लिये वनिमिय दर जोखिमों का प्रबंधन महत्त्वपूर्ण हो जाता है।
- **पूंजी पलायन और वित्तीय स्थिरता:**
 - रुपए को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में ले जाने से पूंजी पलायन की स्थिति भी बन सकती है, यदनि वशिषक रुपये में भरोसा खो दें या प्रतकूल आर्थिक स्थितियों को लेकर आशंकित हों।
 - इससे देश के वदिशी मुद्रा भंडार पर दबाव पड़ सकता है, वित्तीय स्थिरता प्रभावित हो सकती है और मौद्रिक नीति प्रबंधन के लिये चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- **पूंजी नरिंत्रण:**
 - भारत में अभी भी पूंजी नरिंत्रण लागू है जो वदिशियों की भारतीय बाजारों में नविश और व्यापार करने की क्षमता को सीमिति करता है।
 - इन प्रतबिंधों के कारण रुपए का अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में व्यापक रूप से उपयोग करना कठिन हो जाता है।
- **प्रतस्पर्द्धी मुद्राएँ:**
 - रुपए को अमेरिकी डॉलर, यूरो और येन जैसी स्थापित अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं से प्रतस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता है, जनिहें पहले

से व्यापक स्वीकृति और तरलता प्राप्त है।

- बाज़ार हस्तिसेदारी हासलि करना और इन प्रमुख मुद्राओं को वस्तिथापति करना एक महत्त्वपूर्ण चुनौती सदिध हो सकती है।

आगे की राह:

- **मुद्रा परविरतनीयता को सुदृढ करना:**
 - भारत को रुपए के लयि पूर्ण पूंजी खाता परविरतनीयता प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रति करना चाहयि।
 - इससे अंतर्राष्टरीय व्यापार और नविश के लयि एक व्यवहार्य मुद्रा के रूप में इसका आकर्षण बढेगा।
 - इस संबंघ में पूंजी प्रवाह को उदार बनाने और वदिशी मुद्रा नयितरण को सरल करने के प्रयास महत्त्वपूर्ण सदिध होंगे।
- **द्वपिक्षीय मुद्रा व्यवस्था को प्रोत्साहति करना:**
 - व्यापार नपिटान में रुपए के उपयोग को बढावा देने के लयि भागीदार देशों के साथ **द्वपिक्षीय मुद्रा वनिमिय समझौतों (currency swap agreements)** को कयि जा सकता है।
 - इस तरह की व्यवस्था से डॉलर पर नरिभरता कम हो सकती है और अन्य देशों के साथ मज़बूत आर्थकि संबंघों को बढावा मलि सकता है।
- **क्षेत्रीय पहलों का लाभ उठाना:**
 - भारत स्थानीय मुद्राओं में क्षेत्रीय व्यापार नपिटान को बढावा देने के लयि क्षेत्र के अन्य देशों के साथ सहयोग कर सकता है।
 - **चिंगमाई पहल बहुपक्षीयकरण (Chiang Mai Initiative Multilateralization- CMIM)** जैसी पहलों में भाग लेने से व्यापार में एशयिाई मुद्राओं के उपयोग को सशक्त कयि जा सकता है और डॉलर पर नरिभरता कम हो सकती है।
- **व्यापार साझेदारी में वविधिता लाना:**
 - भारत को वशिष्ट देशों के साथ आयात और नरियात की सघनता को उचित करने के लयि अपनी व्यापार साझेदारयिों में वविधिता लानी चाहयि।
 - व्यापक व्यापारकि साझेदारों के साथ जुडने से वैश्वकि व्यापार में रुपए के उपयोग में वृद्धकि अवसर पैदा होंगे।
- **मुद्रा स्थरिता में वशिवास का नरिमाण:**
 - **वविकपूर्ण राजकोषीय एवं मौद्रकि नीतयिों का प्रदर्शन करने और मुद्रा स्थरिता बनाए रखने से** अंतर्राष्टरीय व्यापार के लयि एक वशिवासनीय एवं स्थरि मुद्रा के रूप में रुपए में वशिवास पैदा करने में मदद मलिगी।

अभ्यास प्रश्न: भारत, वैश्वकि व्यापार में रुपए की भूमकि को बढाने के साथ अमेरकिी डॉलर पर अपनी नरिभरता को कसि प्रकार कम कर सकता है?

यूपीएससी सवलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

[?/?/?/?/?/?/?/?/?/?]:

प्रश्न. हाल ही में नमिनलखिति में से कसि मुद्रा को IMF के SDR बास्केट में शामिल करने का प्रस्ताव रखा गया है? (2016)

- (a) रूबल
- (b) रैंड
- (c) भारतीय रुपया
- (d) रैनमनिबी

उत्तर : (d)

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि:(2019)

- 1- करय शक्ति समता [परचेजगि पावर पैरटि(PPP)] वनिमिय दरों की गणना वभिन्नि देशों में एक समान वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों की तुलना कर की जाती है।
- 2- PPP डॉलर के संदर्भ में भारत, वशिव की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर : (a)

